International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-04-2021, Accepted: 12-05-2021, Published: 31-05-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 69-72

हिन्दी काव्यशास्त्र का उद्भव एवं विकासः एक अध्ययन

डॉ. हेमन्त सिंह कंवर
सहायक प्रध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय मुकुट धर पाण्डेय कॉलेज, कटघोरा, कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
भारतीय काव्यशास्त्रीय विद्वान आचार्य भरत को काव्यशास्त्र का आद्य आचार्य और उनके ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' को प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ मानते हैं। शिव सिहं सरोज के अनुसार हिन्दी से प्रथम आचार्य 'पुष्य' थे, जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में अलंकार ग्रंथ का प्रणयन किया था। किन्तु पुष्य के द्वारा सृजित काव्यशास्त्रीय ग्रंथ अनुपलब्ध हैं। हिन्दी साहित्य में काव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। काव्य की एक विधा 'छन्दों' से जहाँ काव्य में लय, गति एवं संगीतात्मकता आती है, वहीं, 'रस' मनुष्य को सुखद–दुःखद अनुभूतियों के हिडोलों में झुलाते रहते हैं। काव्य में अलंकारों का भी अपना विशेष महत्त्व है। भारतीय काव्यशास्त्रा में अलंकार के लिए तीन शब्द प्रयुक्त हुए हैं– अलंकार, लक्षण और चित्रा। इनमें सर्वमान्य और सर्व प्रचलित शब्द है अलंकार। आचार्य शुक्ल कृपाराम कृत 'हित तरंगिणि', संवत् 1588 को प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ स्वीकार करते हैं।

मूलशब्दः भारतीय सुसंस्कृत, स्त्री संवेदना।

प्रस्तावना
हिन्दी काव्यशास्त्र का उद्भव और विकास संस्कृत काव्यशास्त्र की भाँति अनिश्चित है। अतः निश्चित रूप से हिन्दी का प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ किसे माना जाए? हिन्दी विद्वानों में मतैक्य नहीं है। आचार्य विद्याधर 'कवियतीति इति कविः तस्य कर्म काव्यम्' अर्थात् काव्य रचना करने वाले को कवि और उसके कर्म को काव्य कहते हैं। काव्य मीमांसाकार ने शब्द और अर्थ के सहभाव को बताने वाली विधा को 'साहित्य विधा' माना है। भारतीय काव्यशास्त्रीय विद्वान आचार्य भरत को काव्यशास्त्र का आद्य आचार्य और उनके ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' को प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ मानते हैं। शिव सिहं सरोज के अनुसार हिन्दी से प्रथम आचार्य 'पुष्य' थे, जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में अलंकार ग्रंथ का प्रणयन किया था। किन्तु पुष्य के द्वारा सृजित काव्यशास्त्रीय ग्रंथ अनुपलब्ध हैं। संभवतः इसीलिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल इस मत को मात्र जनश्रुति मात्र मानते हैं। ऐसी दशा में आचार्य शुक्ल कृपाराम कृत 'हित तरंगिणि', संवत् 1588 को हिन्दी साहित्य में काव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। काव्य की एक विधा 'छन्दों' से जहाँ काव्य में लय, गति एवं संगीतात्मकता आती है, वहीं, 'रस' मनुष्य को सुखद–दुःखद अनुभूतियों के हिडोलों में झुलाते रहते हैं। काव्य में अलंकारों का भी अपना विशेष महत्त्व है। भारतीय काव्यशास्त्र में अलंकार के लिए तीन शब्द प्रयुक्त हुए हैं अलंकार, लक्षण और चित्रा। इनमें सर्वमान्य और सर्व प्रचलित शब्द है अलंकार।

यदि इन प्रश्नों पर विचार किया जाए तो ज्ञात होता है कि भारतीय मनीषियों ने संसार को असारता पर बहुत पहले ही विचार कर लिख लिया था। इस नश्वर संसार में कुछ भी अवशेष नहीं रहता फिर यश ही क्या शेष रहेगा? काव्यशास्त्रियों ने 'यश की प्राप्ति' काव्य का मुख्य प्रयोजन माना है, कुछ सीमा तक यह ठीक भी है, किंतु उसी को मुख्य नहीं माना जा सकता। कवि द्वारिद्रयपूर्ण तथा अभाव ग्रस्त जीवन को व्यतीत करता है, उससे धन की प्राप्ति भी मुख्य नहीं माना जा सकता, क्योकि धन की प्राप्ति तो इससे भी अधिक और अनेक उपायों से हो सकती है। यश के लिए भी यही तर्क है स्मारक आदि से यश अमर हो जाता है, पर काव्य – सर्जना के समय इसको विश्वासपूर्वक नहीं कहा जा सकता है कि वह लोकप्रिय होगा ही । यदि यश – प्राप्ति ही काव्य का मुख्य प्रयोजन है तो काव्य के विषयों में इतना विभेद क्यों? स्पष्ट है कि दूसरे खण्डन करके अपने मत की स्थापना से उसका यश भी स्वयं को मिलेगा तो इसका भी क्या भरोसा कि कोई दूसरा उसके मत का खण्डन करके उसे भी यश हीन नहीं करेगा।

स्पष्ट है कि यश की प्राप्ति अथवा धन की प्राप्ति अथवा उपदेश देने की भावना को काव्य का गौण प्रयोजन भले ही स्वीकार कर लिया जाए, इसे काव्य का मुख्य प्रयोजन कथमेव स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि उपदेशक तो कवि की अपेक्षा एक परिव्राजक भली–भांति दे देता है और काव्य का अध्येता आनन्द प्राप्ति की भावना से जब काव्य का अध्ययन करता है तो उपदेशक कहॉ ग्रहण करता है?

विषयवस्तु
आचार्य शुक्ल कृपाराम कृत 'हित तरंगिणि', संवत् 1588 को प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ स्वीकार करते हैं। कृपाराम के पश्चात् कतिपय विद्वान सूरदास कृत 'साहित्य लहरी', अष्टछाप के कवि नंददास कृत 'रूप मंजरी', 'रस मंजरी' और 'विरह मंजरी', रहीमदास कृत 'बरवै नायिका', मोहनलाल मिश्र रचित ' श्रृंगार सागर', कर्णेश द्वारा रचित 'कर्णाभरण', 'श्रुतिभूषण' और 'भूपभूषण', बलभद्रकृत 'नखशिख' और मुनिलाल कृत 'रामप्रकाश' को काव्यशास्त्रीय ग्रंथ मानते हैं। किन्तु खेद है कि इनमें भी प्रायः सभी ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं। ऐसी दशा में हिन्दी काव्यशास्त्र के इतिहास में इन ग्रंथों का महत्त्व जो भी हो, परन्तु हिन्दी काव्यशास्त्र का उत्सव इन्हीं ग्रंथों से माना जाना चाहिए । क्योंकि परंपरा का प्रवाह एकाएक तीव्र नहीं होता है। आचार्य केशव के बाद चिन्तामणि के पश्चात् हिन्दी काव्यशास्त्र की धारा प्रवाहित होती है, निसंदेह आचार्य केशव पूर्व हिन्दी साहित्य में सृजित काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का महत्त्व स्वयं सिद्ध हो जाता है। वस्तुतः हिन्दी काव्यशास्त्र का विधिवत् श्रीगणेश आचार्य केशव से आरंभ होता है। हिन्दी काव्यशास्त्र की परंपरा आचार्य केशवदास से लेकर अद्यावधि तक प्रवाहमान है। हिन्दी काव्यशास्त्र के विकास क्रम को निम्न चरणों में दिखाया जा सकता है।

1. पद्यकाल (रीति काल)
2. गद्यकाल (आधुनिक काल)

पद्यकाल

हिन्दी साहित्य की दृष्टि से यह काल रीतिकाल कहा जाता है। यद्यपि इस काल से पूर्व कृपाराम कृत 'हित तरंगिणी' से लेकर मुनिलाल कृत 'राम प्रकाश' ग्रंथों द्वारा हिन्दी काव्यशास्त्र के बीजांकुरित हो चुके थे। किन्तु आचार्य केशवदास तथा उनके पश्चात् के आचार्यों ने हिन्दी काव्यशास्त्र को पूर्ण व्यवस्था प्रदान की थी क्योंकि इसी काल से काव्यशास्त्र के संपूर्ण अंगों के विवेचन की परंपरा चल पड़ती है। आचार्य केशवदास कृत 'रसिक प्रिया' ;सं. 1648 वि. और 'कविप्रिया' ;सं 1658 वि. से पद्यकाल का प्रारंभ होता है। आचार्य केशवकृत 'रसिक प्रिया' और 'कविप्रिया' में काव्यशास्त्र का समग्र विवेचन हुआ है। आचार्य केशव के पश्चात् 50 वर्षों तक हिन्दी काव्यशास्त्र की धारा तमसावृत्त हो जाती है, क्योंकि आचार्य केशवदास कृत कविप्रिया, 1658 वि. के ठीक 50 वर्षों के बाद चिंतामणि ने सं. 1700 वि. के आसपास 'काव्यविवेक', 'कविकुल', 'कल्पित काव्य प्रकाश' और 'रसमंजरी' आदि काव्यशास्त्रीय ग्रंथों के प्रणयन से हिन्दी काव्यशास्त्र की धारा को पुनर्जीवित किया था। आचार्य चिंतामणि के पश्चात् हिन्दी काव्यशास्त्रीय परंपरा अबाध गति से प्रवाहित होती है। यद्यपि कतिपय शोध कर्ताओं ने आचार्य केशवदास और चिंतामणि के बीच लुप्त प्रायः काव्यशास्त्रीय परंपरा को पाटने के प्रयत्न किए हैं, किन्तु सम्यक् प्रमाणों के अभाव में शोध कर्त्ताओं के प्रयत्न जनश्रुति मात्र ही रह गए हैं। आलोच्य काल के प्रमुख आचार्यों में महाराजा जसवंत सिंह कृत 'भाषा भूषण', तोषकृत 'सुधानिधि', मतिराम कृत 'रसराज', 'ललित ललाम', 'साहित्य सार', 'अलंकार पंचाशिका' और 'लक्षण श्रृंगार', कुलपित मिश्र कृत रस रहस्य और 'गुणरस रहस्य', भूषण कृत 'शिवराज भूषण', सुखदेव मिश्र कृत 'वृत्त विचार', 'छंद विचार', पदुमनदास कृत 'काव्य मंजरी', देव कृत 'काव्य रसायन', 'रस विलास' और 'भाव विलास', गोपकृत 'रामचंद्राभरण', कुमारमणि कृत 'रसिक रसाल', सूरति मिश्र कृत 'अलंकार माला', 'रस रत्नमाला', 'रस ग्राहक' आदि, रसिक सुमति कृत 'अलंकार चंद्रोदय', श्रीपति कृत 'कविकुल कल्पद्रुम', 'रस सागर' और 'काव्यसरोज' आदि, खंडन कायस्थ कृत 'भूषणदाम', सोमनाथ कृत 'रस पीयूष निधि', भिखारीदास कृत 'काव्य निर्णय', रसरूप कृत 'तुलसी भूषण', रूप साहि कृत 'रूप विलास', जनराज कृत 'कविता रस विनोद', रसिक गोविन्द कृत 'दूषणोल्लास' और 'रसिक गोविन्दाघन' उल्लेखनीय हैं। इस काल के अन्य काव्यशास्त्रीय ग्रंथों के प्रणेताओं में विश्वनाथ, जनराज, हरिचरणदास, उमेदराम, ब्रह्मदत्त, काशिराज, ईश्वर कवि, गिरिधर दास, निहाल, ग्वाल, गोकुल दास, जानकी प्रसाद, गुलाब सिंह लछिराम, जगन्नाथ, प्रवीण सागर गंगाधर द्विज, मुरारिदान आदि नाम महत्त्वपूर्ण हैं। वस्तुतः हिन्दी काव्यशास्त्र के पद्यकाल में संस्कृत काव्यशास्त्र की परंपरा की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। डॉ. नगेंद्र हिन्दी रीतिकाल (पद्यकाल) के ग्रंथों को संस्कृत के आचार्यों के प्रभाव से तीन शैली में सृजित मानते हैं।

1. काव्य प्रकाश की निरूपण शैली जिसमें काव्य के सभी अंगों पर थोड़ा बहुत प्रकाश डाला गया है।
2. श्रृंगार तिलक और रसमंजरी आदि की श्रृंगारमयी नायिका भेद वाली शैली जिसमें केवल श्रृंगार के विभिन्न अंगों विशेषकर नायिका के भेद का निरूपण किया गया है ।
3. चंद्रालोक की संक्षिप्त अलंकार निरूपण शैली जिसमें अलंकारों के ही संक्षिप्त लक्षण और उदाहरण मिलते हैं। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि हिन्दी काव्यशास्त्र के अलोच्य काल में जहाँ अलंकार, रस और ध्वनि सिद्धांत का व्यापक विवेचन हुआ है वहीं ऐसे ग्रंथों का प्रणयन भी पर्याप्त हुआ है, जिनमें काव्य के विविध अंगों का निरूपण हुआ है।

गद्यकाल

हिन्दी साहित्य के सन् 1900 ई. के बाद के काल को गद्य काल के नाम से अभिहित किया जा सकता है। हिन्दी काव्यशास्त्र के इतिहास में सन् 1900 ई. के पश्चात् अधिकांश काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का प्रणयन खड़ी बोली गद्य में हुआ है। हिन्दी काव्यशास्त्र का आलोच्य युग कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। इस युग में पद्यकालीन स्वतंत्रता काव्यशास्त्रीय ग्रंथों के रूप में हिन्दी काव्यशास्त्र भंडार की पर्याप्त वृत्ति हुई है। इस युग के प्रमुख काव्यशास्त्रियों में जगन्नाथ प्रसाद 'भानु', बिहारी भट्टड्ड, भारतेंदु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मिश्र बंधु, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', कन्हैयालाल पोद्दार, रामचंद्र शुक्ल, श्यामसुंदर दास, डॉ. रमाशंकर 'रसाल', रामदहिन मिश्र, कृष्ण बिहारी मिश्र, गुलाबराय, बलदेव प्रसाद उपाध्याय, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु', भोलानाथ व्यास, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नंद दुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा, राममूख्रत त्रिपाठी, डॉ. नगेंद्र, डॉ. नामवर सिंह, आशा गुप्ता, सुरेश गुप्ता, गणपति चंद्र गुप्त आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वस्तुतः हिन्दी काव्यशास्त्र के गद्य काल में काव्यशास्त्र से संबंधित विषयों का विवेचन एवं विश्लेषण करने वाले आचार्यों की सूची पर्याप्त लम्बी है। इस दृष्टि से गद्य काल के जितने भी काव्यशास्त्र से संबंधित ग्रंथकारों का उल्लेख किया जाए, प्रायः अपर्याप्त है। अस्तु गद्य काल के काव्यशास्त्र विषयक ग्रंथों के प्रणेताओं को निम्न वर्गों में बाँटा जा सकता है।

वर्ग 1: पद्य काल के आचार्यों की रीति में स्वतंत्रता काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का प्रणयन करने वाले आचार्य।

वर्ग 2: काव्यशास्त्र का प्रासंगिक विवेचक हिन्दी साहित्यकार।

वर्ग 3: नवीन दृष्टि के काव्यशास्त्र के पुनर्व्याख्याता विद्वान।

हिन्दी काव्यशास्त्र के इतिहास के पद्यकाल के आचार्यों की रीति में स्वतंत्रता काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का प्रणयन करने वाले आचार्यों में जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' कृत 'काव्य प्रभाकर', सं. 1966 वि. उल्लेखनीय है। इस ग्रंथ में बारह मयूखों में क्रमशः छंद, ध्वनि, नायिका भेद, उद्दीपन, अनुभाव, संचारी, स्थायी भाव, रस, अलंकार, काव्य निर्णय, कोश लोकोक्ति संग्रह का विवेचन है। इसी क्रम में बिहारी लाल भट्टड्ड कृत 'साहित्यसागर' सं. 1994 भी महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ में नाटक और गद्य काव्य सहित 15 तरंगों में साहित्य के सभी अंगों का निरूपण हुआ है। कन्हैयालाल पोद्दार कृत 'काव्य कल्पद्रुम' सं. 1983 ई. भी उल्लेखनीय कृति है। कन्हैयालाल पोद्दार कृत इस ग्रंथ के दो खंड 'रस मंजरी' और 'अलंकार मंजरी' हैं। इन ग्रंथों में क्रमशः काव्यांग निरूपण और अलंकारों का सोदाहरण प्रतिपादन हुआ है। भारतेन्दु कृत 'नाटक ग्रंथ' में भी काव्यशास्त्र की सामग्री विद्यमान है। हरिश्चंद्र के नाटक में नाटक के स्वरूप का निर्धारण किया है, भारतेंदु ने नाटक के स्वरूप निर्धारण में संस्कृताचार्यों ने नाट्य संबंधी विचारों का समर्थन किया है। पद्यकाल की भाँति स्वतंत्रता काव्यशास्त्रीय ग्रंथ प्रणेताओं में मिश्र बंधु का नाम भी उल्लेखनीय है। मिश्र बंधु कृत प्रत्येक रचनाओं में काव्यशास्त्रीय सामग्री विद्यमान है। मिश्र बंधु के इस प्रकार की रचनाओं में 'मिश्र बंधु विनोद', 'हिन्दी नवरत्न' ग्रंथ अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। किन्तु मिश्र बंधु का विशुद्ध रूप से काव्यशास्त्रीय ग्रंथ 'साहित्य पारिजात' है। हिन्दी काव्यशास्त्र के परवर्ती आचार्यों में श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का स्थान महत्त्वपूर्ण है। हरिऔध कृत 'रस कलश' सं. 1988 वि. काव्यशास्त्रीय ग्रंथ है। 'रस कलश' में रसों का विवेचन हुआ है। डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' कृत 'अलंकार पीयूष' 1986 वि. ग्रंथ में अलंकारों का व्यवस्थित विवेचन और विश्लेषण हुआ है। इसी क्रम में अर्जुनदास केडिया कृत 'भारती

भूषण' सं. 1987 वि., आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा कृत 'अलंकार मुक्तावली' और रामदहिन मिश्र का 'काव्यदर्पण' सं. 2004 वि. भी महत्त्वपूर्ण काव्यशास्त्रीय ग्रंथ है। क्रमशः प्रथम दो ग्रंथों में अलंकारों और तृतीय ग्रंथ में काव्यशास्त्र का समग्र निरूपण किया गया है। हिन्दी काव्यशास्त्र के गद्यकाल में साहित्यकारों के द्वारा अपनी रचनाओं में भी काव्यशास्त्र विषय का प्रासांगिक विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। इन साहित्यकारों में मिश्र बंधु कृत 'हिन्दी नवरत्न' और 'मिश्र बंधु विनोद' सर्वप्रथम उल्लेखनीय है। यद्यपि ये ग्रंथ व्यावहारिक आलोचना से संबंधित हैं, किन्तु इन ग्रंथों में मुख्य रूप से काव्यशास्त्रीय विषयों का विवेचन हुआ है। इसी क्रम में 'हरिऔध' का नाम भी उल्लेखनीय है। हरिऔध ने अपनी काव्यकृतियों की भूमिकाओं में काव्यशास्त्र का विवेचन किया है। पद्म सिंह शर्मा कृत 'बिहारी सतसई' और 'प्रेमराग' में भी सैद्धांतिक विवेचन है। कृष्ण बिहारी मिश्र कृत 'देव और बिहारी', 'मतिराम ग्रंथावली की भूमिका' और 'नवतरंग की भूमिका' आदि ग्रंथों में काव्यशास्त्र से संबंधित कतिपय विषयों का अल्प विवेचन प्राप्त होता है। इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद कृत 'काव्य और कला तथा अन्य निबंध', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कृत 'प्रबंध प्रेम', 'प्रबंध प्रतिभा' और 'चाबुक', कविवर पंत कृत 'पल्लव' का प्रवेश भूमिका, 'आधुनिक कवि' का पर्यालोचन भूमिका, में 'उत्तरा' की प्रस्तावना और 'युगवाणी' का दृष्टिपात, भूमिका और महादेवी की काव्य कृतियों की भूमिकाओं में काव्यशास्त्र का परंपरिक और कुछ मौलिक विवेचन हुआ है। हिन्दी काव्यशास्त्र के गद्यकाल में नवीन दृष्टिकोण से काव्यशास्त्र के पुनर्व्याख्याता आचार्यों में आचार्य महावीर प्रसाद का नाम सर्वप्रथम लिया जा सकता है। यद्यपि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किसी विशिष्ट काव्य सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं किया था, तथापि 'सरस्वती' पत्रिका के संपादकत्व और 'रसज्ञ रंजन' आदि ग्रंथों द्वारा युगीन कवियों का मार्ग प्रशस्त किया था। आचार्य द्विवेदी के काव्य संबंधी विचारों में न तो परंपरा के प्रति लगाव है और न ही पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत के प्रति अतिरिक्त आग्रह। पूर्वी और पश्चिमी काव्यशास्त्रीय विचारों से समन्वित भारतीय काव्यशास्त्र की पुनर्व्याख्या करने वाले आचार्यों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल अग्रणीय हैं। आचार्य शुक्ल संपादित और सृजित सभी रचनाओं में काव्यशास्त्र की प्रचुर सामग्री है। किन्तु आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'रस मीमांसा' विशुद्ध रूप से काव्यशास्त्रीय ग्रंथ है। इसी परम्परा में श्यामसुन्दर दास कृत 'साहित्यालोचन' और 'रूपक रहस्य' भी महत्त्वपूर्ण काव्यशास्त्रीय ग्रंथ हैं। आचार्य श्यामसुंदर दास कृत 'साहित्यालोचन' में कला, साहित्य, काव्य, कविता, गद्य काव्य, रस शैली और आलोचना तथा 'रूपक रहस्य' में रूपकों और रसों का विवेचन है। काव्यशास्त्र की नव्य व्याख्या करने वालों में आचार्य गुलाबराय का नाम भी श्रद्धापूर्वक लिया जाता है। इनके 'नवरस', सिद्धांत और अध्ययन' और 'काव्य रूप' काव्यशास्त्रीय ग्रंथ हैं। इन ग्रंथों में पूर्वी और पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय विचारों का समन्वय हुआ है। लक्ष्मीनारायण सुधांशु कृत 'काव्य में अभिव्यंजनावाद' और 'जीवन के तत्त्व और काव्य के सिद्धांत' में एक ओर भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांतों का समन्वय हुआ है, वहीं सुधांशु ने भारतीय और पाश्चात्य दर्शन आदि के आश्रय से काव्यशास्त्र को व्यापकता प्रदान की है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के 'भारतीय साहित्य शास्त्र' दो खंड और 'संस्कृत आलोचना' ग्रंथ भी महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं। बलदेव उपाध्याय संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने हिन्दी में इन ग्रंथों का प्रणयन करके हिन्दी काव्यशास्त्र की समृद्धि की है। 'भारतीय साहित्यशास्त्र' के प्रथम खंड में काव्य और काव्य से संबंधित विषयों तथा द्वितीय खंड में संस्कृत काव्यशास्त्र का ऐतिहासिक और सैद्धांतिक विवेचन किया गया है। आपका काव्यशास्त्रीय विवेचन पर्याप्त सुव्यवस्थित और प्रामाणिक है। आचार्य उपाध्याय कृत 'संस्कृत समालोचना' ग्रंथ तीन खंडों में लिखा गया है – प्रथम – खंडकाव्य, द्वितीय – खण्ड काव्यरूप और तृतीय – खंड काव्य सिद्धांत हैं। इतना ही नहीं परिशिष्ट के अंतर्गत संस्कृत समालोचना का क्रमिक विकास और मान्य आचार्यों का विवेचन किया गया है। निस्संदेह आचार्य बलदेव उपाध्याय कृत काव्यशास्त्रीय ग्रंथ हिन्दी साहित्य में काव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। काव्य की एक विधा 'छन्दों' से जहाँ काव्य में लय, गति एवं संगीतात्मकता आती है, वहीं, 'रस' मनुष्य को सुखद–दुःखद अनुभूतियों के हिडोलों में झुलाते रहते हैं। काव्य में अलंकारों का भी अपना विशेष महत्त्व है। भारतीय काव्यशास्त्र में अलंकार के लिए तीन शब्द प्रयुक्त हुए हैं– अलंकार, लक्षण और चित्रा। इनमें सर्वमान्य और सर्व प्रचलित शब्द है अलंकार।

काव्यशास्त्र की अमूल्य धरोहर है। डॉ. भोलाशंकर व्यास कृत 'भारतीय साहित्यशास्त्र' भी अत्यंत उपयोगी काव्यशास्त्रीय ग्रंथ है। इस ग्रंथ में भारतीय काव्यशास्त्र का समग्र, सुस्पष्ट विवेचन किया गया है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र कृत 'वांग्यमय विमर्श' भी महत्त्वपूर्ण काव्यशास्त्र का ग्रंथ है। यद्यपि इस ग्रंथ में काव्यशास्त्र के अतिरिक्त इतिहास और भाषा विज्ञान सामग्री भी है, फिर भी इस ग्रंथ में काव्यशास्त्र की संपूर्ण सामग्री उपलब्ध है।

काव्यशास्त्र के व्याख्याता आचार्यों में डॉ. नगेंद्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आचार्य शुक्ल की भाँति डॉ. नगेंद्र रसवादी और भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांतों के समन्वित विचारधारा के काव्यशास्त्रीय हैं। डॉ. नगेंद्र मूलतः हिन्दी साहित्य में काव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

साहित्य के आलोचक हैं। किन्तु उनकी आलोचना प्रवृत्ति सर्वथा सैद्धांतिक है। इसीलिए आपके अधिकांश आलोचना ग्रंथों में काव्यशास्त्र की प्रचुर सामग्री है। इतना ही नही डॉ. नगेंद्र के प्रमुख काव्यशास्त्रीय ग्रंथ 'रीतिकाव्य की भूमिका', 'देव और उनकी कविता', 'अरस्तु का काव्य सिद्धांत', 'विचार और विवेचना', 'विचार और अनुभूति', 'रस सिद्धांत', 'भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका' और 'भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा' अत्यंत उपयोगी ग्रंथ हैं। इन ग्रंथों में डॉ. नगेंद्र ने भारतीय काव्यशास्त्र की सम्यक् जानकारी दी है और साथ ही अपनी मौलिक तथा समन्वित विचारधारा द्वारा परंपरित काव्य सिद्धांतों में नव्यता का समावेश किया है। डॉ. नगेंद्र द्वारा संपादित संस्कृत के काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में 'हिन्दी काव्यालंकार सूत्र', 'हिन्दी वक्रोक्ति जीवित', ' हिन्दी ध्वन्यालोक' उल्लेखनीय हैं। हिन्दी काव्यशास्त्र के इतिहास में उल्लेखनीय नाम डॉ. भगीरथ मिश्र का भी है। डॉ. भगीरथ मिश्र द्वारा सृजित 'काव्यशास्त्र', ' हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास और 'हिन्दी रीति साहित्य' महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं। इन ग्रंथों में काव्यशास्त्र की समग्र सामग्री का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। काव्यशास्त्रा की व्याख्या करने वाले हिन्दी के अन्य काव्य–शास्त्रियों में डॉ. एस. पी. खत्री कृत 'पाश्चात्य समालोचना के सिद्धांत', आचार्य सीताराम चतुर्वेदी कृत 'अभिनव नाट्यशास्त्र' और 'समीक्षाशास्त्र', डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत कृत 'शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत', दो भाग, डॉ. रामलाल सिंह कृत 'समीक्षा दर्शन', गणेश त्रयंबकम देशपांडे कृत 'भारतीय साहित्यशास्त्र', राममूख्रत त्रिपाठी कृत 'भारतीय काव्य शास्त्र की नई व्याख्या', 'साहित्य शास्त्र के प्रमुख पक्ष' और 'भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज', गणपति चंद्र गुप्त कृत 'रस सिद्धांत का पुनख्रववेचन' और 'भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत' आदि महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं। आलोच्य काल में शोधात्मक प्रवृत्ति के विकास के साथ काव्यशास्त्र पर आधारित अनेक शोध प्रबंध प्रकाश में आए हैं। किन्तु सब ग्रंथों का उल्लेख कर पाना अत्यंत कठिन है। शोध पर आधारित प्रमुख काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में आनंद प्रकाश दीक्षित कृत 'रस सिद्धांतः स्वरूप विवेचन', राकेश गुप्त कृत 'मनोविज्ञान के प्रकाश में रस सिद्धांत का समालोचनात्मक अध्ययन' और 'नायक नायिका भेद', राममूख्रत त्रिपाठी कृत 'लक्षणा और उसका हिन्दी में प्रसार', डॉ. बच्चूलाल अवस्थी कृत 'ध्वनि सिद्धांत तथा तुलनीय

साहित्य चिन्तन', डॉ. शेर सिंह बिष्ट कृत 'ध्वनि सिद्धांत', ओमप्रकाश कृत 'हिन्दी अलंकार साहित्य', आशा गुप्ता कृत 'खड़ी बोली काव्य में अभिव्यंजनावाद' आदि ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। इन ग्रंथों के अतिरिक्त ऐसे अनेक शोध प्रकाश में आए हैं, जिनका उल्लेख कर पाना अत्यंत कठिन कार्य है। वस्तुतः हिन्दी काव्यशास्त्र के पद्यकाल में सृजित काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में संस्कृत काव्यशास्त्र के ग्रंथों का स्पष्ट प्रभाव है। किन्तु गद्य काल में जितनी काव्यशास्त्र संबंधित सामग्री प्रकाश में आयी, उसमें परंपरागत और पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांतों का प्रभाव है।

उपसंहार

भारतीय काव्यशास्त्रीय विद्वान आचार्य भरत को काव्यशास्त्र का आद्य आचार्य और उनके ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' को प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ मानते हैं। भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास के प्रथम चरण में काव्यशास्त्र विषयक उपलब्ध एक मात्र ग्रंथ आचार्य भरतकृत 'नाट्यशास्त्र' है। काव्य के लिए अलंकारों की अनिवार्यता की धारणा जाती रही क्योंकि आनंदवर्धन ने ध्वनि को काव्य की आत्मा का पद प्रदान करके, रस, गुण, अलंकार और रीति को ध्वनि के गुणों के उत्कर्षक माना। शिव सिहं सरोज के अनुसार हिन्दी के प्रथम आचार्य 'पुष्य' थे, जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में अलंकार ग्रंथ का प्रणयन किया था। हिन्दी काव्यशास्त्र के इतिहास में सन् 1900 ई. के पश्चात् अधिकांश काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का प्रणयन खड़ी बोली गद्य में हुआ है। हिन्दी काव्यशास्त्र के गद्यकाल में साहित्यकारों के द्वारा अपनी रचनाओं में भी काव्यशास्त्र विषय का प्रासांगिक और विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. भारतीय काव्यशास्त्र – सत्येन्द्र चौधरी।
2. पाश्चात्य समालोचन के सिद्धान्त – डॉ. एस. पी. खत्री।
3. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र – सत्यदेव चौधरी एवं शान्तिस्वरूप गुप्त।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
5. साहित्य इतिहास एवं संस्कृति – शिव कुमार मिश्र।
6. हिन्दी आलोचना की परम्परा – कालूराम परिहार।